



चाणक्य का यथार्थवादी चिंतन और समकालीन भारतीय समाज में उसकी प्रासंगिकता

¹अविक वर्मा तथा डॉ ²सीमा शर्मा

1. शोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग, कला एवं मानविकी संकाय, मंगलायतन विश्वविद्यालय, बिसवान, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत
2. सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, कला एवं मानविकी संकाय, मंगलायतन विश्वविद्यालय, बिसवान, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

चाणक्य, जिन्हें कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय बौद्धिक परंपरा के ऐसे महान चिंतक हैं जिनके विचार समय की सीमाओं को पार करते हुए आज भी उतने ही प्रासंगिक बने हुए हैं। उनका ग्रंथ *अर्थशास्त्र* केवल प्राचीन शासन प्रणाली का विवरण नहीं है, बल्कि यह मानव व्यवहार, राज्य की संरचना, आर्थिक संतुलन और कूटनीतिक रणनीतियों का एक व्यापक मार्गदर्शक है। वर्तमान भारतीय समाज, जो तेजी से बदलते सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवेश में अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, चाणक्य के यथार्थवादी चिंतन से महत्वपूर्ण दिशा प्राप्त कर सकता है। आज के समय में नैतिक मूल्यों का हास, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, आर्थिक असमानता, सामाजिक विघटन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसी समस्याएँ समाज को जटिल बना रही हैं। ऐसे में चाणक्य का यह दृष्टिकोण कि राज्य और समाज का संचालन आदर्शवाद के साथ-साथ यथार्थ को ध्यान में रखकर होना चाहिए, अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। यह शोध-पत्र चाणक्य के विचारों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है और यह स्पष्ट करता है कि उनके सिद्धांत आधुनिक भारतीय समाज में किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, साथ ही उनकी सीमाओं का भी समालोचनात्मक अध्ययन करता है।

मुख्य शब्द: चाणक्य, कौटिल्य, अर्थशास्त्र, यथार्थवाद, भारतीय राजनीतिक चिंतन, शासन, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, कूटनीति, समकालीन भारतीय समाज, नैतिकता, लोककल्याण ।

प्रस्तावना

भारतीय चिंतन परंपरा में चाणक्य का स्थान अद्वितीय है, क्योंकि उन्होंने समाज और राज्य के संबंधों को केवल सैद्धांतिक रूप से नहीं, बल्कि व्यावहारिक दृष्टिकोण से समझाया। वे ऐसे विचारक थे जिन्होंने यह स्पष्ट किया कि केवल आदर्शों के आधार पर समाज का निर्माण संभव नहीं है, बल्कि वास्तविक परिस्थितियों और मानव स्वभाव को ध्यान में रखना आवश्यक है। आज का भारतीय समाज आधुनिकता और परंपरा के बीच एक संतुलन बनाने की चुनौती का सामना कर रहा है। एक ओर तकनीकी प्रगति, डिजिटल क्रांति और वैश्वीकरण ने विकास के नए द्वार खोले हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक असमानता, नैतिक पतन और राजनीतिक अस्थिरता जैसी समस्याएँ भी बढ़ी हैं। इस संदर्भ में यह प्रश्न उठता है कि क्या केवल आधुनिकता ही पर्याप्त है, या हमें अपने पारंपरिक ज्ञान और मूल्यों की ओर भी ध्यान देना चाहिए। चाणक्य का चिंतन इस प्रश्न का उत्तर देता है, क्योंकि उन्होंने सत्ता, नैतिकता और समाज के बीच एक संतुलित संबंध स्थापित करने की बात की। उनका दृष्टिकोण हमें यह सिखाता है कि एक सफल समाज वही है जिसमें शक्ति और नैतिकता का संतुलन बना रहे।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य चाणक्य के यथार्थवादी चिंतन को समझना और उसे समकालीन भारतीय समाज के संदर्भ में परखना है। इसके अंतर्गत यह प्रयास किया गया है कि उनके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और कूटनीतिक विचारों का विश्लेषण किया जाए और यह देखा



जाए कि वे आज के लोकतांत्रिक ढाँचे में किस प्रकार प्रासंगिक हैं। साथ ही, उनके विचारों की सीमाओं को समझते हुए यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि उन्हें आधुनिक संदर्भ में कैसे संशोधित और लागू किया जा सकता है।

शोध पद्धति

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें ऐतिहासिक ग्रंथों, शोध-पत्रों, पुस्तकों और आधुनिक विश्लेषणों का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए विश्लेषणात्मक (Analytical) और वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है, जिससे चाणक्य के विचारों को समकालीन संदर्भ में स्पष्ट रूप से समझा जा सके। साथ ही, तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर यह देखा गया है कि उनके सिद्धांत आधुनिक राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्थाओं से किस प्रकार मेल खाते हैं और किन क्षेत्रों में भिन्नता रखते हैं।

चाणक्य का यथार्थवादी चिंतन: एक गहन विश्लेषण

चाणक्य का चिंतन इस बात पर आधारित था कि समाज और राज्य को समझने के लिए मानव स्वभाव की वास्तविकता को स्वीकार करना आवश्यक है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि मनुष्य केवल नैतिकता से प्रेरित नहीं होता, बल्कि उसके व्यवहार में स्वार्थ, भय, लोभ और महत्वाकांक्षा जैसे तत्व भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यही कारण है कि उन्होंने शासन व्यवस्था को इस प्रकार संरचित करने की बात की जिसमें इन मानवीय प्रवृत्तियों को नियंत्रित किया जा सके और समाज में संतुलन बनाए रखा जा सके। उन्होंने अनुशासन, कर्तव्य और नैतिकता को समाज की स्थिरता के लिए अनिवार्य माना। आज के समय में, जब व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है और सामाजिक जिम्मेदारियाँ पीछे छूटती जा रही हैं, चाणक्य का यह विचार अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है कि स्वतंत्रता के साथ उत्तरदायित्व भी आवश्यक है। यदि व्यक्ति केवल अपने हित को सर्वोपरि मानने लगे, तो समाज में असंतुलन और विघटन उत्पन्न हो सकता है।

शासन और प्रशासन: चाणक्य के सिद्धांत और आधुनिक परिप्रेक्ष्य

चाणक्य के अनुसार शासन का उद्देश्य केवल सत्ता का संरक्षण नहीं, बल्कि जनता का कल्याण है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि एक सफल शासक वही है जो अपनी प्रजा की सुरक्षा, समृद्धि और संतोष को प्राथमिकता देता है। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी यही सिद्धांत लागू होता है, जहाँ सरकार को जनता के प्रति उत्तरदायी माना जाता है। हालांकि, वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार, लालफीताशाही और जवाबदेही की कमी जैसी समस्याएँ देखी जाती हैं। चाणक्य के विचार इन समस्याओं के समाधान के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उनका जोर इस बात पर था कि प्रशासनिक तंत्र पारदर्शी, कुशल और अनुशासित होना चाहिए। यदि शासन में ईमानदारी और जवाबदेही सुनिश्चित की जाए, तो राज्य की स्थिरता और जनता का विश्वास दोनों मजबूत होते हैं।

आर्थिक चिंतन और समकालीन भारतीय अर्थव्यवस्था

चाणक्य ने अर्थव्यवस्था को राज्य की आधारशिला माना और इस पर विशेष ध्यान दिया कि आर्थिक नीतियाँ संतुलित और न्यायपूर्ण हों। उन्होंने यह सुझाव दिया कि कर-प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो राज्य को सशक्त बनाए, लेकिन जनता पर अत्यधिक बोझ न डाले। आज के भारत में, जहाँ आर्थिक विकास के साथ-साथ असमानता भी बढ़ रही है, चाणक्य का संतुलन-आधारित दृष्टिकोण अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य को आर्थिक गतिविधियों का संरक्षक होना चाहिए, न कि शोषक। यह विचार आधुनिक "कल्याणकारी राज्य" की



Cover Page



अवधारणा से मेल खाता है, जिसमें सरकार का उद्देश्य केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और समान अवसर सुनिश्चित करना भी होता है।

कूटनीति और वैश्विक राजनीति में चाणक्य का योगदान

चाणक्य की कूटनीतिक सोच अत्यंत व्यावहारिक थी। उनका मंडल सिद्धांत इस विचार पर आधारित था कि अंतरराष्ट्रीय संबंध स्थायी नहीं होते, बल्कि वे समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं। आज के वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ देश अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर गठबंधन बनाते और तोड़ते हैं, चाणक्य का यह सिद्धांत स्पष्ट रूप से लागू होता है। हालांकि, आधुनिक समय में कूटनीति में नैतिकता, अंतरराष्ट्रीय कानून और मानवाधिकार जैसे तत्व भी महत्वपूर्ण हो गए हैं। इसलिए चाणक्य के सिद्धांतों को इन मूल्यों के साथ संतुलित करके अपनाना आवश्यक है।

समकालीन भारतीय समाज में व्यापक प्रासंगिकता

चाणक्य का चिंतन केवल शासन और राजनीति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के हर क्षेत्र में लागू होता है। आज के भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों का क्षरण, सामाजिक असंतुलन और प्रशासनिक समस्याएँ इस बात का संकेत देती हैं कि हमें अपने मूलभूत सिद्धांतों की ओर पुनः ध्यान देने की आवश्यकता है। चाणक्य का दृष्टिकोण हमें यह सिखाता है कि एक मजबूत समाज केवल आर्थिक विकास से नहीं, बल्कि नैतिकता, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व से बनता है। उनके विचार यह भी बताते हैं कि व्यक्तिगत और सामूहिक हितों के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है, अन्यथा समाज में अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है।

आलोचनात्मक विश्लेषण

यद्यपि चाणक्य के विचार अत्यंत प्रभावशाली हैं, फिर भी उनकी कुछ सीमाएँ भी हैं। उनके द्वारा सुझाई गई कठोर दंड नीति, गुप्तचर तंत्र और छल-रणनीति आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप नहीं मानी जाती। इसलिए यह आवश्यक है कि उनके विचारों को ज्यों का त्यों लागू करने के बजाय, उन्हें वर्तमान संदर्भ में समझकर संशोधित किया जाए। इस प्रकार, चाणक्य का अध्ययन केवल ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं, बल्कि एक समकालीन दृष्टिकोण से भी किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि चाणक्य का यथार्थवादी चिंतन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। उनके विचार हमें यह सिखाते हैं कि समाज और राज्य के विकास के लिए नैतिकता और यथार्थ के बीच संतुलन आवश्यक है। आधुनिक भारतीय समाज, जो अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है, चाणक्य के सिद्धांतों से प्रेरणा लेकर एक अधिक संतुलित और न्यायपूर्ण दिशा में आगे बढ़ सकता है। यदि उनके विचारों को आधुनिक लोकतांत्रिक और संवैधानिक मूल्यों के साथ समन्वित किया जाए, तो वे भविष्य के लिए एक मजबूत मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

संदर्भ-

- कौटिल्य। (2012). *अर्थशास्त्र* (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।
- थापर, रोमिला। (2002). *प्राचीन भारत*. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।



Cover Page



INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)

Volume:15, Issue:5(2), May 2026

Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A

Article Received: Reviewed: Accepted

Publisher: Sucharitha Publication, India

Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

-
- मुखर्जी, राधाकुमुद। (1966). *प्राचीन भारत में राजनीतिक चिंतन*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
 - घोषाल, उपेन्द्रनाथ। (1959). *भारतीय राजनीतिक विचारों का इतिहास*. ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
 - चंद्र, बिपिना। (2008). *स्वतंत्रता के बाद का भारत*. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।